प्रार्थना

नहीं चाहता तेरी भक्ति
न ही उससे जागृत शक्ति
नहीं चाहता तुम्हारा साक्षात्कार
ना ही मोक्ष का खुला द्वार
नहीं चाहता स्वर्ग में स्थान
न सुख सरिता का स्नान
नहीं चाहता ज्ञान परब्रह्म का
बंधक होऊं मैं पाश पूर्व जनम का
क्या तू, क्या मैं, क्या ये सारा ब्रह्मांड
नहीं जानना ये सब कांड
न कोई विद्या न सफलता की चाह
नहीं चुनता यह कोई भी राह
मेरी बस एक ही अभिलाषा भगवान
बना दे मुझे एक अच्छा इन्सान

वरुण अग्रवाल
~2000?

Simplifying Spirituality